॥ ... मायनमः ॥

...कारादि

...ाम स्तोत्रम्

(...स्तुति-आरती इत्यादि सहित)

—संपादक—

श्री १०८ स्वामी माधवानन्द गिरिजी महाराज
महामण्डलेश्वर
—सांख्य-योग, वेदान्ताचार्य

—प्रकाशक—

"कैलास ज्ञानमाला"

कैलासाश्रम, बिरदोपुर, वाराणसी – २२१०१०

"कैलास ज्ञानमाला" —तृतीय पुष्प

पुस्तक प्राप्ति स्थान–

१. कैलासाश्रम, बिरदोपुर, वाराणसी – २२१०१०

२. संन्यासाश्रम, वैजनत्था, वाराणसी – २२१०१०

३. गुल्लूप्रसाद कालीदास बुक्सेलर, कचौड़ीगली, वाराणसी–१

इस ग्रंथ के प्रकाशन का पूरा खर्च श्रीमती कृष्णा देवी सुहासरिया कलकत्ता ने दिया है। परात्पर ब्रह्म भगवान राम उन्हें सुख शान्ति दें एवं कल्याण करें यह भावना। ग्रंथ का दुरुपयोग न हो एवं पुनः प्रकाशन होता रहे इसलिये ग्रंथ का मूल्य लागत मात्र रखा है।

—सम्पादक

प्रथमावृत्ति १००० } मूल्य १.०० मात्र { महाशिवरात्रि संवत् २०३९

प्राक्कथन

राम एव परं ब्रह्म राम एव परं तपः ।
राम एव परं तत्त्वं श्री रामो ब्रह्म तारकम् ॥

—रामरहस्योपनिषद्

मुमुक्षु के लिए जब तक इच्छा एवं भय है तब तक उपासना, ईश्वर आराधना जरूरी है भगवान की उपासना कल्पवृक्ष है। जैसे कल्पवृक्ष के नीचे बैठकर जो चाहते हैं वही मिल जाता है वैसे ही भगवान की उपासना से संसार के सुख भोग एवं भगवत् प्राप्ति या जो चाहते हो वो मिल जाता है। सकामभाव से भगवत् उपासना-आराधना करने से सुख भोग मनो-वांछित फल की प्राप्ति होती है, निष्कामभाव से भगवान की उपासना आराधना करने से अन्तःकरण की शुद्धि द्वारा भगवत् प्राप्ति, ज्ञान, मोक्ष की प्राप्ति होती है। भगवान के अनेक स्वरूप निराकार, साकार, निर्गुण और सगुण इत्यादि है। देहाभिमानी के लिए सगुण साकार उपासना श्रेष्ठ है। भगवान् के अनेक अवतार एवं साकार रूप है जैसे राम, कृष्ण, शिव, भगवती इत्यादि। उसमें भगवान राम की उपासना की विशेषता है। भगवान राम की उपासना के बहुत से साधन उपनिषद् एवं अन्य शास्त्रों में हैं। उन सब साधनों में भगवान राम के नाम की प्रधानता है। राम के सहस्रों नाम हैं उसमें भी रकार आदि राम सहस्र नाम की अति प्रधानता है। ब्रह्मयामल तंत्र में रकार आदि राम सहस्र नाम का एक अमोघ तांत्रिक प्रयोग है जो सघ फलप्रद है सभी प्रकार के पापों की निवृत्ति करने वाला है। एक बार नित्य प्रति पाठ करने से लक्ष्मी की प्राप्ति, दो बार करने से जगतंवसी होता है, तीन आवृत्ति के छः मास पाठ करने से शिव रूप हो जाता है, चार आवृत्ति से दिव्यकाय पाँच से पुत्रवान कीर्तिवान, छह से सर्वसिद्धि, सात से वाचासिद्धि इत्यादि होता है यह बात ग्रंथ की फलश्रुति में विस्तार से बताई है। निष्काम भाव

से रकार आदि रामसहस्रनाम स्तोत्र पाठ से अन्तःकरण की शुद्धि होकर भगवान् राम की प्राप्ति, राम की कृपा से गुरु की प्राप्ति एवं गुरु से ज्ञान तथा ज्ञान से मोक्ष की प्राप्ति होती है, जो मानव जीवन का मुख्य लक्ष्य है। रकारादि रामसहस्रनाम स्तोत्र को रामरहस्य स्तोत्र भी कहते हैं। भगवान राम के उपासकों के लिए यह अमोघ साधन है। भूमिशयन, एकाहारी, जितेन्द्रिय होके श्रद्धाभक्ति पूर्वक पाठ करने से शीघ्र फलप्रद होता है। भगवान श्रीराम भगवान भूतभावन शंकर के इष्ट हैं। भगवान शंकर ने ही जगत जननी भगवती पार्वती की अतीव जिज्ञासा और श्रद्धा देखकर रकार आदि रामसहस्रनाम का सर्वप्रथम उन्हें उपदेश दिया है। भगवान शंकर की काशी नगरी से ही रकारादि रामसहस्रनाम स्तोत्र का प्रकाशन हो रहा है।

रकार आदि रामसहस्र नाम का यह अमोघ ग्रंथ की हस्तलिखित प्रति आज से लगभग २० वर्ष पूर्व धर्मप्रचारार्थ राजस्थान की यात्रा के समय सुजानगढ़ में रुपयों वाले मन्दिर के महन्त श्री तारादासजी ने मुझे दी थी एवं उसे छपवाने का अनुरोध भी किया था। कई एक विघ्नबाधा के कारण ग्रंथ छप न सका। इस वर्ष मेरा पुनः सुजानगढ़ राजस्थान जाना हुआ तब फिर महन्त श्री तारादास जी ने ग्रंथ की याद दिलाई, बात पुनः ताजी हुई ग्रंथ छपवाने का निश्चय हुआ, भगवान राम ने संयोग एवं सहायता भी प्रदान की उसके फलस्वरूप ग्रंथ आपके हाथ में शुशोभित है। एक रामभक्त के आग्रह से अमृतवाणी, रामरक्षा स्तोत्र इत्यादि उपादेय सामग्री भी सम्मिलित की गई है। भगवान राम के साधकों एवं उपासकों को अमूल्य लाभ मिले इसमें मैं अपना परिश्रम सफल मानूंगा। भगवान राम सबका कल्याण करें एवं सद्बुद्धि दें, इस ग्रंथ का लाभ ज्यादा से ज्यादा रामभक्त लें, "रामे चित्तलयः सदा भवतु मे भो राम मायुद्धर" यह भगवान से करवद्ध प्रार्थना है।

मकर संक्रान्ति
संवत् २०३९

—स्वामी रामचन्द्र गिरि
संन्यासाश्रम, बैजनत्था, वाराणसी
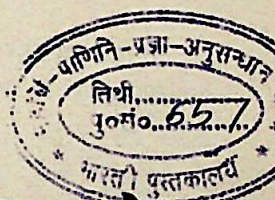
॥ श्री रामाय नमः ॥

अथ श्री रकारादि 'रामसहस्रनाम स्तोत्रम्'

श्रीदेव्युवाच

देव देव महादेव भक्तानुग्रहकारक।
त्वत्तः श्रुत्वा मया पूर्वं मन्त्राणां शतकोटयः ॥ १ ॥
तन्त्राणि तन्त्रजालानि सरहस्यानि यानि च।
तानि तानि महासिद्धिः कल्पितानि शुभानि च ॥ २ ॥
गुटिका पादुकासिद्धिः परकायप्रवेशनम्।
वाचासिद्धिश्चार्थसिद्धिस्तथासिद्धिर्मनोमयी ॥ ३ ॥
ज्ञानविज्ञानकर्माणि नानासिद्धिकराणि च।
लक्ष्मीकुतूहलासिद्धिर्वागसिद्धिस्तु खेचरी ॥ ४ ॥
केनेदं सर्वमाप्नोति देव मे वद तत्त्वतः।

श्रीमहादेव उवाच

लक्षवारसहस्राणि वारितासि च त्वं प्रिये।
स्त्रीस्वभावान्महादेवि पुनस्त्वं परिपृच्छसि ॥ ५ ॥

श्रीदेव्युवाच

शंभो शिव प्राणनाथ करुणानिधिशंकर।
श्रीरामतत्त्वजिज्ञासा जायते परमेश्वर ॥ ६ ॥
रहस्यं रामचन्द्रस्य रकाराक्षरपूर्वकम्।
ब्रूहि रामसहस्रं त्वं यद्यहं तव वल्लभा ॥ ७ ॥

स्त्रियो वा पुरुषो वापि स्मृत्वा ब्रह्मत्वमाप्नुयुः ।
तद्रहस्यं समासेन वदस्व करुणानिधे ॥ ८ ॥

श्रीशिव उवाच

महागुह्यं महागोप्यं महामंगलदायकम् ।
महासिद्धिकरं पुंसां महाव्याधिविनाशनम् ॥ ९ ॥

महापापहरं साक्षात्सर्वसौभाग्यवर्द्धनम् ।
राज्यं देयं शिरो देयं देयं स्त्रीपुत्रकं प्रिये ॥ १० ॥

आत्मतुल्यधनं देयं न देयं रामतत्त्वकम् ।
तथापि नामसाहस्रं देवानामपिदुर्लभम् ॥ ११ ॥

न प्रोक्तं कस्यचित्क्वापि कस्मिन्काले महेश्वरि ।
तव स्नेहात्प्रवक्ष्यामि शृणुष्व शुभगानने । १२ ॥

ॐ अस्य श्री रकारादि श्रीरामसहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य श्री भगवान् नारायण ऋषिः। श्रीदेवीगायत्री छन्दः। श्रीरामचन्द्रो देवता। ॐ श्रीं रां क्लीं बीजम्। ह्रीं शक्तिः। ॐ अव्यक्तादिति कीलकम्। मम धर्मार्थकाममोक्षार्थे जपे विनियोगः।

ॐ श्रीभगवान् नारायण ऋषये नमः शिरसि। ॐ श्री देवी गायत्री छन्दसे नमो मुखे। ॐ श्रीरामचन्द्रदेवतायै नमो हृदि। ॐ श्रीं रां क्लीं बीजाय नमो गुह्ये। ॐ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। ॐ अव्यक्तकीलकाय नमः सर्वांगे। ततः करन्यासः। ॐ रां श्रीं क्रुद्धोल्काय स्वाहा अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ रां क्लीं महोल्काय स्वाहा तर्जनीभ्यां नमः। ॐ रां ह्रीं वीरोल्काय स्वाहा मध्यमाभ्यां नमः। ॐ रां रीं विद्युदुल्काय स्वाहा अनामिकाभ्यां नमः। ॐ रां क्रुं क्लीं अर्द्धोल्कायस्वाहा कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ रां रां रां श्रीं क्लीं ह्रीं रां क्लुं क्लीं सहस्रोल्काय स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। एवं हृदयादिषडङ्गन्यासः। ॐ रां श्रीं क्रुद्धोल्काय स्वाहा

हृदयाय नमः। ॐ रां क्लीं महोल्काय स्वाहा शिरसे स्वाहा। ॐ रां ह्रीं वरोल्काय स्वाहा शिखायै वौषट्। ॐ रां रीं विद्युदुल्काय स्वाहा कवचाय हुम्। ॐ रां क्रुं क्लीं अर्द्धोल्काय स्वाहा नेत्र त्रयाय वौषट्। ॐ रां रां रां श्रीं क्लीं ह्रीं रां क्लुं क्लीं सहस्रोल्काय स्वाहा प्रचोदयात् अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

नीलेन्दीवरतुल्यश्यामवदनं पीताम्बरालङ्कृतं
मुद्रां ज्ञानमयीं दधानमपरां पद्मासने संस्थिताम्।
सीतां पार्श्वगतां सरोरुहकरां विद्युन्निभां राघवं
पश्यन्तीमुकुटांगदादिविविधाकल्पोज्ज्वलाङ्गं भजे ॥ १३ ॥

ॐ रामो रमाकरोदीप्तो रक्तनेत्रो रमापतिः।
रणभूमिविहारी च रक्तपादोऽनुणच्छविः ॥ १४ ॥

रघुवीरोमहावीरो धीरो वै सर्वराङ्गविः।
रंगनाथार्चितपदो रामोराजीवलोचनः ॥ १५ ॥

राजधर्मप्रियोरिष्टोविशिष्टो राक्षसान्तकः।
रामश्चानंतमर्यादापालको राघवो हरिः ॥ १६ ॥

रंभाफलकृताहारो रंभाप्राणसुरोत्तमः।
रमारमणसर्वेशो रघुवंशकृतालयः ॥ १७ ॥

रत्नरत्नानिवर्माणि दिव्यरत्नविभूषितः।
ऋषीश्वरो महाप्राज्ञो राजत्केयूरकुण्डलः ॥ १८ ॥

रंजको भंजकः खंडो रक्तवस्त्रसदाप्रियः।
रणमूर्तीरणेकामी रणध्यानपरायणः ॥ १९ ॥

रणयुद्धरतोविद्वान् रणविद्यातिचातुरः।
रिंफः तुंफस्फुरगाणिराजीवो राजसंप्रियः ॥ २० ॥

रंकमूर्ती राज्यभोगी राज्यभागप्रदः पुमान् ।
रमाकर्मरतो वीरो रमा सन्तुष्टचेतसः ॥ २१ ॥
रमाविहारी रघुराट् रमा शक्त्यैकविग्रहः ।
रमाविग्रहधारी च रमाध्यानपरायणः ॥ २२ ॥
रमाभिचारनिरतो रमाज्ञापरिपालकः ।
रमाकर्मैकसन्तुष्टो रमारमणवत्सलः ॥ २३ ॥
रमाप्रमोदसहितो रमा अग्रगतो हरिः ।
रमा सहायो भगवान् रावणप्राणहारकः ॥ २४ ॥
रमासर्वंकरीसाक्षी रमाभद्रोदयानिधिः ।
रमाप्रियो रमेयात्मा रमाभाग्य विवर्द्धनः ॥ २५ ॥
रमाकान्तो रमानाथो राघवोरिष्ठभंजनः ।
रमाविश्वस्य जननी राघवेन्द्रस्वरूपधृक् ॥ २६ ॥
रमाप्रचारी भगवान् रमा संवोधनप्रभुः ।
रमाकार्यरतो रिक्तो रमालावण्य संभवः ॥ २७ ॥
रमादानरतः श्रीश्नो रमापाणि प्रपालकः ।
रमारमेन्द्रो रक्तांगो रक्तविग्रहविग्रहः ॥ २८ ॥
रमादया करो विष्णुरादिनारायणः कविः ।
रमाविश्वस्यरूपात्मा श्रीकृष्णकालशासनः ॥ २९ ॥
रमासर्वंकरीयन्त्रो रामचन्द्रो ह्यनुव्रतः ।
राघवो भाग्यवान् वीरो रणमध्ये जयप्रद्रः ॥ ३० ॥
रमासंघेन संरमो रमापूजा सदा प्रियः ।
रमाहास्य सुहासी च रमा सख्यैक सुन्दरः ॥ ३१ ॥
रमाविधानसम्पन्नो रमानन्दनकारकः ।
रमासर्वपरिप्लोता रमारमण कारणः ॥ ३२ ॥

रमा मान प्रकारी च रमा ज्ञान विशारदः।
रमालेखनलेखा च रमावेला रमागतिः ॥ ३३ ॥

रमासंकष्ट हर्ता च नृसिंहो भक्तवत्सलः।
रमाप्रतीतसहिता तस्याज्ञापरिपूर्णताः ॥ ३४ ॥

रामचन्द्रश्च लक्ष्मी च रमार्चितपादुकः।
रमालोक विलासी च रमा रामस्य सर्वदा ॥ ३५ ॥

रमा सुधर्म कर्मा च रमा सर्वार्थं साधकः।
रमाकीटपतङ्गाद्या रमा सर्वमिदं जगत् ॥ ३६ ॥

रमापाद्य महापुण्यमयो रामो धुरन्धरः।
रमा प्रवीणो विश्वात्मा सर्वात्मा विश्वपूजितः ॥ ३७ ॥

रमा स्थावररूपा च रघुवंशोतिनिर्मलः।
रमाप्रसादसहिता रमाचंचलचंचलः ॥ ३८ ॥

रमाभरणभूतात्मा रमापोषणकारकः।
रमापूर्णितपूर्णात्मा रमा वाराह संयुताः ॥ ३९ ॥

रमा कूर्मेण सहिता रमामत्स्यसमन्वितः।
रमा नृसिंहसहिता रमावामन संयुताः ॥ ४० ॥

रमा रामेण सहिता रमाकृष्णपरायणः।
रमा बौद्ध स्वरूपा च रमा कल्किस्वरूपधृक् ॥ ४१ ॥

रमा विष्णु स्वरूपात्मा रमा राम सदागतिः।
रमापतिः स्वरूपात्मा रमा संसर्गसंगमः ॥ ४२ ॥

रमाप्रधानमानज्ञो रमा सर्वेश्वरो हरिः।
रमा शरीरवासी च रमाविज्ञान दर्शकः ॥ ४३ ॥

रमातत्त्वोपदेष्टा च रमा मन्त्र परायणः।
रमाभोगप्रदाता च रमादुःख विमोचकः ॥ ४४ ॥

रमासुरेन्द्रचर्चांतु रमामानस मानसः ।
रमा तर्पण तृप्ता च रमागाथारुणाकृतिः ॥ ४५ ॥

रमा गौरमयीमूर्ती रमा श्यामस्वरूपकः ।
रमापीतस्वरूपा च रघुनाथः पुरातनः ॥ ४६ ॥

रमाकरो रमादांतो रमासत्वो रमा छविः ।
रमाधारो महावीरो रमा अव्यक्त दर्शनः ॥ ४७ ॥

रमातत्त्वपरिज्ञानी रमा राज्यविहारकः ।
रमा रेवा तटेधीरो रमा मन्त्र जपोत्कटः ॥ ४८ ॥

रमा सुरेन्द्रवन्द्या च रघु सर्वांग सुन्दरः ।
रमा आब्रह्म संयुक्ता राघवस्य प्रिया सती ॥ ४९ ॥

रमा तत्त्वपरिज्ञानी रमा राज्थ विहारकः ।
रमा राघव संयुक्तो राघवस्य प्रिया सती ॥ ५० ॥

रमा यज्ञमयी मूर्ती रामचन्द्रस्य संगतिः ।
रमारूपी रामचन्द्रः परब्रह्म स्वरूपकः ॥ ५१ ॥

रक्तचन्दनलिप्ताङ्गो रक्तमाल्यानुलेपनः ।
रक्तपुष्पप्रियो रामो वेदविद्याविशारदः ॥ ५२ ॥

रक्तवस्त्रविलासी च राघवो रघुपुंगवः ।
रमा सेवाकरो नित्यं सत्यसन्धः प्रतापवान् ॥ ५३ ॥

राजाधिराजो भगवान् चतुर्धा मूर्तिधारकः ।
राजेन्द्रो भवहर्ता च राक्षसेन्द्रवरप्रदः ॥ ५४ ॥

राजकीर्तिर्लोकमूर्ती रामः सत्यपराक्रमः ।
रमायस्यार्द्धदेहस्था रामो विराध मर्दनः ॥ ५५ ॥

राघवेन्द्रो वीरभद्रो रणकर्कशकर्कशः ।
राकिन्याद्यामहाशक्ति सेव्य मान पदाम्बुजः ॥ ५६ ॥

रमारमण सर्वेशों महाराजो महाद्युतिः ।
राज्यदो भक्त भक्तानां मद्भक्तानां च किंकरः ॥ ५७ ॥

रतिप्रियो रतीनाथो रागीरागविशारदः ।
रविः शनैश्चरो भद्रो ग्रहरूपी जनार्दनः ॥ ५८ ॥

रमाकला रमाक्लिन्नो रमाभाग्यो रमांगदः ।
रमा राम भवों भीमो ममभीतिविनाशकृत् ॥ ५९ ॥

रमाक्रिया रमा वीर्यो सर्वंधर्मैक साधकः ।
रक्तप्राणप्रियो रामो रक्त पात्रकरप्रभुः ॥ ६० ॥

रक्तमांसप्रियो वीरो नारायणस्वरूपकः ।
रक्तास्थिचर्चको विद्वान् दीननाथो दिनप्रभुः ॥ ६१ ॥

रमा रक्तेश्वरः शुद्धो रामश्चैतन्य चेतसः ।
रमा अपूर्व कर्मज्ञो धर्मकर्म प्रवर्तकः ॥ ६२ ॥

रामो विश्वस्य कर्ता च रामो विश्वस्य नन्दनः ।
रामो विश्वस्य लुप्ता च रामो विश्वकुलान्तकः ॥ ६३ ॥

रामो विश्वस्य भर्ता च रामों राज्याधिपेश्वरः ।
रामो जगद्धितो वीरो रामः सर्वार्थदर्शकः ॥ ६४ ॥

रामो विरामो विरजो कोशल्यानन्दवर्द्धनः ।
रामः सुरातृप्तिकर्ता रामो मांसस्यभक्षकः ॥ ६५ ॥

रामः श्रीशाम्भवः साक्षाच्छ्रीसीता शाम्भवी परा ।
रामश्चक्रप्रचारी च रामस्त्रैलोक्यव्यापकः ॥ ६६ ॥

राम सदाशिवो मूर्तिः कालमूर्तिर्दिगम्बरः ।
राम कृपाकरो देवो विश्वव्यापी निरंजनः ॥ ६७ ॥

रामो निरामयो नित्यो नित्यस्सर्वगतो व्ययः ।
रामो वायु स्वरूपात्मा रामः कालैकरूपकः ॥ ६८ ॥

रामो धरामूर्तिरूपो रामः कालान्तको हरिः।
रामो विभीषण श्रीदः परब्रह्म मयोदितः ॥ ६९ ॥
रामो राक्षसहंता च राक्षानां च कुलान्तकः।
रम्यमाणपदांभोजो रमते सकलं जगत् ॥ ७० ॥
रुक्मिणीप्रियकर्ता च रुक्मिणी मानसेस्थितः।
रुक्मिणी स्वार्थदाता च रुक्मिणी वल्लभो हरिः ॥ ७१ ॥
रुक्मिणीसिद्धिदः सिद्धः सिद्धसाध्यादिवंदितः।
रुक्मिणी प्रियभाग्या च रुक्मिणी भाग्यवर्द्धनः ॥ ७२ ॥
रुक्मिणी भक्ति भक्ता च रुक्मिणी सौख्य दर्शकः।
रुक्मिणी श्रीस्वरूपा च रुक्मिणीप्राणनायकः ॥ ७३ ॥
रुक्मिणी भोगमुक्ता च रुक्मिणीभगतर्पणः।
[1]रुक्मिणी दुःखहर्ता च रुक्मिणी दिव्य दर्शनः ॥ ७४ ॥
रुक्मिणी संग संगा च रामो नारायणे व्ययः।
रुक्मिणी राज्यदाता च रुक्मिणी वाक्यसिद्धिदः ॥ ७५ ॥
रुक्मिणी रूपरुपा च स्त्रीरूपा च पतिव्रता।
राधाराधितचित्तात्मा राधावन्दित सर्वदा ॥ ७६ ॥
राधा नाम सदानन्दो राधा त्रैलोक्यमोहिनी।
राधासिद्धि सुनिष्ठा च राधाभक्ति रतो रघुः ॥ ७७ ॥
राधारूपी रामचन्द्रो राधामोहन मोहनः।
राधामन्त्र स्वरूपात्मा श्रीमान् दाशरथिः प्रभुः ॥ ७८ ॥
राधासुखनिधानं च रामो विश्वस्य मोहनः।
राधाप्राणतृप्ति करो राधाकर्मप्रचारकः ॥ ७९ ॥
राधासत्य व्रताधीनो राम नाम सदागतिः।
रकारः सर्वदेवानां तेजः पुंज सनातनः ॥ ८० ॥

---

१. रुक्मिणी प्राण दाता च रुक्मिणी प्राण रक्षकः।

रकारः सर्वदेवानां साक्षात्कालानलप्रभुः ।
रकारः सर्वभूतानां बीजरूपी जनार्दनः ॥ ८१ ॥

रकारः सर्वजीवानां सर्वं पापस्य दाहकः ।
रकारः सर्वसौख्यानां सिद्धिदस्तु पुरातनः ॥ ८२ ॥

रकारः सर्वविद्यानां वेद्यस्तत्वसनातनः ।
रकारः सर्वसाध्यानां साधकोऽनन्त रूपधृक् ॥ ८३ ॥

रकारः सर्वभूतानां व्याप्यव्यापकमीश्वरः ।
रकारोत्पद्यते नित्यं रकारो लीयते जगत् ॥ ८४ ॥

रकारो निर्विकल्पश्च शुद्धबुद्धिश्च सदाद्वयः ।
रकारः सर्वकामश्च परिपूर्णं मनोरथः ॥ ८५ ॥

रकारः सर्वदुष्टानां नाशको रघुनायकः ।
रकारः सर्वसिद्धानां स्मरणदायको गुरुः ॥ ८६ ॥

रकारो धर्म कामानां मोक्षश्चार्थैक सिद्धिकृत् ।
रकारः सर्वसत्वानां महामोदमयः स्वराट् ॥ ८७ ॥

रामहास्यकरीमाया माया राम यशस्करी ।
रामतेजस्करी माया सर्वकालेषु सर्वदा ॥ ८८ ॥

राम राज्यकरी माया राजराजमयो हरिः ।
रामभोगकरी माया कालि काले निरन्तरम् ॥ ८९ ॥

रामो दुर्गमहन्ता च रामः सौभाग्यसुन्दरः ।
रामसर्वार्थदाता च भगवान् भवभंजनः ॥ ९० ॥

रामनाम सदानन्दो रामनाम सदा गतिः ।
राम नाम सदा तुष्टो रामनामस्वरूपकः ॥ ९१ ॥

रामनामपरावेदा रामनाम सदा शुचिः ।
राम नामपरो यज्ञा राम नाम परो ध्वनिः ॥ ९२ ॥

राम नाम परं बीजं राम नाम परं जगत् ।
रामउदार कर्मा च रामाच्च सकलं जगत् ॥ ९३ ॥

रामो दयाकरोधीर्यो दुःखदारिद्रमर्दनः ।
राम नामपरं ज्ञानं विश्वं रामस्य चाश्रयम् ॥ ९४ ॥

रामात्परतरं नास्ति कार्यकारणगौरवम् ।
रामस्तपोनिधिर्देवो दीर्घनेत्रो द्युतिच्छदः ॥ ९५ ॥

राम कोशस्य भोक्ता च राजराजो धनाधिपः ।
रामो बाणधरः श्रीमान् चापतूणीरपूर्णकः ॥ ९६ ॥

रामः पराक्रमी कामी कामदेवस्य पालकः ।
रामोहरः पार्वतीशोस्मर्यंते च दिवानिशम् ॥ ९७ ॥

रामों योगस्य सिद्धीनां रामो राजेश्वरो भवत् ।
रकारादोनि नामानि शृण्वतो मम पार्वति ॥ ९८ ॥

मनः प्रसन्नतामेति रामानामाभिशंकया ।
रामः सुरेन्द्र इन्द्रश्च नारदाद्या महर्षयः ॥ ९९ ॥

रामः सेवक सेव्यश्च राघवोविश्व राघवः ।
रामः स्वरूपी रामात्मा रामः प्राणपतिप्रियः ॥ १०० ॥

रामः कृपाकरी मूर्ति राम भद्रो जयप्रदः ।
राम नाम सदासेव्यो रामाचार्योमुनीश्वरः ॥ १०१ ॥

रामः प्रीति कृपासिन्धू रामनाम धनप्रदः ।
रामनाथो महावीर्यो पूर्णं पुण्य विवर्द्धनः ॥ १०२ ॥

रेकतं कश्च कृत्यात्मा रेणुका स्वार्थदायकः ।
रवीन्द्रोही रघुवरो राजराजों महाभुजः ॥ १०३ ॥

रवेर्ध्यानं रवेः पूजा रवि मूर्ति सनातनः ।
रवि सर्वस्वदाता च तेजः पुंजमयः पुमान् ॥ १०४ ॥

रविकलानिधिः साक्षात् कृष्टभ्रष्टस्तपः क्रियाः।
रविकैवल्यवर्णश्च रविस्तीव्रोऽग्रवर्चसः ॥ १०५ ॥

रविर्नित्यगतो ध्येयो रवि सत्यप्रियं वदः।
रविधर्मा रविः कर्मा रविर्गोप्ता रविर्हुतः ॥ १०६ ॥

रविर्दाता रविभोक्ता रविर्लोकपितामहः।
रविमूर्तिस्तु सर्वेषां देवानामालयं परम् ॥ १०७ ॥

रविरूपी महाप्राज्ञो रमेशः पारमार्थिकः।
ऋक्ष सख्यो ऋक्षभृत्यो ऋक्षमन्त्री कृतप्रभुः ॥ १०८ ॥

ऋक्षराज्यप्रदो ऋक्षो ऋक्षाणांपालनोद्यतः।
ऋक्ष राजवधोपेतः सुग्रीवस्यार्थदोविभुः ॥ १०९ ॥

राजराजेश्वरोविष्णु राजराजेश्वरीक्रियाः।
राज चक्रप्रवासो च नष्ट राज्यार्थसिद्धिकृत् ॥ ११० ॥

राज राजाधिराजेशो वीरः सत्य प्रतापवान्।
राज सेवापरो विष्णुरिन्दः सर्वाखिलेष्टदः ॥ १११ ॥

रुरुचर्मपरीधानौ रौरवाघ हरो हरिः।
राजधानी राजकामी महाराजो मुनीश्वरः ॥ ११२ ॥

राजप्रियो राजभाग्यो रजोगुण गणार्चितः।
रघुवंशी रघुश्रेष्ठो राधवो ज्ञानविग्रहः ॥ ११३ ॥

रामो रमाप्रियो नित्यो मुनीनां मानसाधिपः।
रामों नित्य निजानन्दो रमाभक्ति दृढव्रतः ॥ ११४ ॥

राजितः सर्वं सर्वांगो राजत्केयूरकुण्डलः।
राजत्तूणीर वाणश्च राजच्चापधरो विभुः ॥ ११५ ॥

राजच्छविः कृपासिन्धुर्नीराजितपदाम्बुजः।
राजा सत्येश्वरो वीर्याविरजासर्वदुःखहा ॥ ११६ ॥

रिक्त भक्तप्रशस्तात्मा रिक्तभक्तवरप्रदः ।
रिक्तप्रियोरिक्तमार्गो रिक्तार्थै कवि मर्दनः ॥ ११७ ॥

रिक्तसेव्यो रिक्त वर्गो रिक्त स्वाभावभावनः ।
रिक्त कर्ता रिक्तछेत्ता रिक्तविश्व प्रियम्वदः ॥ ११८ ॥

रिक्तधर्मनिवासी च सर्वाशापरिपूरकः ।
रिक्त वर्मा रिक्त कर्मा रिक्तधर्मं बहिष्कृतः ॥ ११९ ॥

रिक्त शूको रिक्तबिम्बो धनुर्विद्याधरोधरः ।
रिक्त वेदविधानेन ऋग्वेदस्य प्रियोनलः ॥ १२० ॥

रिक्त शास्त्र प्रतिज्ञा च रिक्तरिक्तोज्ज्वलः प्रभुः ।
रिक्त पूज्यो रिक्तसेव्यो नित्यरिक्तस्तपस्विनः ॥ १२१ ॥

रामः परात्मा भगवान् सभाग्यो भाग्यवद्र्धनः ।
रामकमलपत्राक्षो रामस्तत्त्व प्रकाशनः ॥ १२२ ॥

रामः शुभार्थिनां नित्यः कैवल्यागमनिष्ठितः ।
रामःसुग्रीव वाल्मीको रामो वाल्मीकिपूजितः ॥ १२३ ॥

रामोनिरामयो देवो जामवान भगवानभवः ।
राज सेवानिवासी च राजकर्मण्यनुव्रतः ॥ १२४ ॥

राजतषङ्ककधारी च विश्वरूपी जनार्दनः ।
रामो विद्यानिधिकान्तः काकपक्षधरोबुधः ॥ १२५ ॥

राक्षसारिर्ब्रह्मबन्धुः परब्रह्मेन्द्रसत्कृतः ।
राम इच्छाप्रचारी च भगवान् भूतवानः ॥ १२६ ॥

रामात्मा परमात्मा च विश्वरूप प्रियान्वितः ।
रागो विरागो वैराग्यो महाविज्ञान भैरवः ॥ १२७ ॥

रामः कुकर्मं हर्ता च रामः श्रीदः क्रियार्थकृत् ।
रामः संसारिणा साध्योः सौख्यदशरणार्थिनाम् ॥ १२८ ॥

रामो धरापतीनां च नीतिरूपी सहस्रपात ।
रक्षणेव्यक्तमूर्तिश्च भूतभव्यभवः परः ॥ १२९ ॥

रीतिनीतिरवोधीमानुग्रसेनापति प्रभुः ।
ऋणत्रयविनिर्मुक्तः करुणामय शंकरः ॥ १३० ॥

रामो गणपतिर्गिव्यः सिद्धिबुद्धिसमन्वितः ।
रामो भैरवमूर्तिश्च रामो विश्वस्य दर्पणः ॥ १३१ ॥

रामः श्रीकामभूतात्मा रामोदिङ्मण्डलावृतः ।
रामो निर्वाणवर्णश्च निर्वाणार्थं प्रबोधकः ॥ १३२ ॥

रामो श्रीसर्वनैमित्य नित्यो नित्य ध्रुवोध्रुवः ।
रामो द्रव्यमयो गम्यो रामः पाताल नायकः ॥ १३३ ॥

रामो ब्रह्माण्डमध्यस्थो गोब्राह्मणहितेरतः ।
रामो द्वितीयः सम्पन्नो निवासी गहनो गुहः ॥ १३४ ॥

रामो निष्कूट रूपात्मा निष्कूटानां भयंकरः ।
रामो भीरूमयो गम्यो देवारि भयवर्द्धनः ॥ १३५ ॥

रमातरंगसहित रमाभार्या रतिप्रियः ।
रमाकेलिकुलाचारो रामचारे गुरोर्गुरुः ॥ १३६ ॥

रश्मिप्रियकरोरश्म्यौ रश्मिदीप्तिकरःपुमान् ।
रामः सन्तुष्टविश्वात्मा रागगान शुभाननः ॥ १३७ ॥

रागसारोरागवृत्तिः रागीरागोविरागहाः ।
राजसेवा राजनीति रतिदो गतिदेश्वरः ॥ १३८ ॥

राजिकाभोजनाशक्तो राजिकागन्धसत्कृती ।
राजिका विजयीधीरो राजिका शाक भोजनः ॥ १३९ ॥

राजिका शत्रुहर्ता च राजिका निन्दकान्तकः ।
राजिका होमसन्तुष्टो रामचन्द्रो दयानिधिः ॥ १४० ॥

राजिका दर्शन प्रीतो राजिकापालन द्युतिः ।
राजिका भंजकोभीमो राजिकाभाव सेवकः ॥ १४१ ॥

राजिकाव्रत दीप्तांगो राजिकाभाग्यबद्‌र्धनः ।
राजिकाकुलविद्या च रामचन्द्रो महेश्वरः ॥ १४२ ॥

राजिकास्तम्भनोत्सर्गो राजिकाभक्तिरक्षिता ।
राजिकामुख्यवीर्या च राजिका शक्ति सम्पुटा ॥ १४३ ॥

राजिका संघ संघा च राजिका चन्दनोद्यताः ।
राजिकाविश्वविश्वा च राजिका रविनाशकः ॥ १४४ ॥

राजिकापुष्पपुष्पा च रामचन्द्र सदाप्रियः ।
राजिका सर्ववश्या च राजिकाभीतिभंजनः ॥ १४५ ॥

राजिका सौम्य सौम्या च राजिकादुष्ट खण्डनः ।
राजिकाक्रूरकर्मा च राजिकायोगविग्रहः ॥ १४६ ॥

राजिकारश्मिकर्ता च रश्मि दीप्तिकरो विभुः ।
राजिका नर्मसन्तुष्टो राजिकाचित्तहारकः ॥ १४७ ॥

राजिकापत्रपद्मा च महाराजो धुरन्धरः ।
राजिका तीव्र वेगा च राजिका वासुमोष्टदः ॥ १४८ ॥

राजिका मोहनो देवो देव देव हरीश्वरः ।
राम नाम परोमन्त्रो राम नाम पराक्रियाः ॥ १४९ ॥

राम नाम परो यज्ञो राम नाम परो जयः ।
राम नाम परं सारं रामो लक्ष्मी समावृतः ॥ १५० ॥

रामश्चाभयकर्ता च रामश्चारिविनाशनः ।
रामो जले चान्तरिक्षे रामो मोदप्रमोद कृत् ॥ १५१ ॥

रामः शुभानिकर्माणि रामोप्यशुभनाशनः ।
रामो मनोभयो देवो [illegible]मयजगन्मयः ॥ १५२ ॥

रामो दामोदरः श्रीशो हृषीकेशो महाबलः।
रामो माधव सर्वाग्र श्रीदः पुण्य जनावृतः ॥ १५३ ॥

रामो दैत्यारिसर्वज्ञो नील लोहित लोचनः।
रामो महाविघ्नहरो रामः श्री त्रिपुरान्तकः ॥ १५४ ॥

रामः स्वभूहृषीकेशः ईश्वरः कल्मषापहः।
रामः पीतः रुणः श्याम सर्वानन्द विवर्द्धनः ॥ १५५ ॥

रामः साक्षात्कृतध्वंसी व्योमकेशस्वरूपधृत्।
रामः सर्वच्छविः कान्तःशान्तो विश्वस्य शासनः ॥ १५६ ॥

रामः शार्ङ्गी महासेनो निजानन्दो महाभुजः।
रामो हरः स्मरो भर्गः सर्वदा धर्म वर्द्धनः ॥ १५७ ॥

रामः स्वयं वीति होत्रो रामः साक्षाद्धनञ्जयः।
रामः कृशानुरेता च रामः पिङ्गलपाटलः ॥ १५८ ॥

रामस्स्वयं सुरश्रेष्ठो राम एव त्रिलोचनः।
राम एव महावीर्यो रामदिव्यशुचिव्रतः ॥ १५९ ॥

राम एव निजं नित्य बुद्धीन्द्रिय मनोमयम्।
राम एव महान्यासो राम एव महाबलः ॥ १६० ॥

राम एव निजं ब्रह्म राम एव महातपाः।
राम एव महाहंसो रामात्मागोचरो नरः ॥ १६१ ॥

रामो नित्य निराकारो रामो भरतरूपकः।
रामस्त्रैलोक्यमध्यस्थो रामःसप्तवसुन्धराः ॥ १६२ ॥

रामः कुमाररूपात्मा रामः पाषंडभंजनः।
रामः मिथ्याविनाशी च रामः सत्यप्रवर्तकः ॥ १६३ ॥

रामो विश्वासवासी च सत्यवासी सरोरुहः।
रामः सर्वगुहागम्यो भक्तानां मानसेश्वरः ॥ १६४ ॥

रामः प्रभाकरः ज्येष्ठ ईप्सितार्थंप्रदर्शकः।
रामस्तालांक भूभार हरणो मदभंजनः ॥ १६५ ॥
रामः प्राण अपानश्च रामोदान समानकः।
रामो नागश्च कृकलो देवदत्तो महेश्वरः ॥ १६६ ॥
रामो धनंजयः सत्यो रामः पञ्चजनाह्वयः।
रामः क्रूरस्य क्रूरात्मा रामो वै पुरुषः प्रियः ॥ १६७ ॥
रामः छलनिहन्ता च रामोदिव्यान्नदायकः।
रामो दिव्यांगनाभोगी रामो ज्ञानवतां वरः ॥ १६८ ॥
रामो निजपरामूर्तिर्मानवाकृतिरीश्वरः।
रामः श्रीतक्षकस्तीव्रो महासत्वोऽतिचंचलः ॥ १६९ ॥
रामोद्वयसदासाक्षी सहिष्णुर्जगदीश्वरः।
रामः श्रीपुरुषो द्वन्द्वः क्षेत्रज्ञो क्षरमुत्तमः ॥ १७० ॥
रामो वीरव्रतो श्रेष्ठः सर्वधर्मेषुवन्दितः।
रामश्चापांनिधिः सौम्यो भगवान् कुम्भसम्भवः ॥ १७१ ॥
रामो ह्यशोकमूर्तात्मा भक्तानां शोकनाशनः।
रामो मत्स्य स्वरूपात्मा सर्वसिद्धिप्रदोगिरः ॥ १७२ ॥
रामो महाक्षोवेदात्मा अकूलश्चप्रदोभवः।
रामः सर्वांगमानन्दी नित्यलक्ष्मी विलासदः ॥ १७३ ॥
इतीदं कथितं देवि राम नामसहस्रकम्।
गोपनीयं प्रयत्नेन पठनीयं परात्परम् ॥ १७४ ॥
न देयं कस्य देवेशि न वाच्यं कस्यचित्प्रिये।
ये ये प्रयोगास्तन्त्रेषु तैस्तैर्यंत्साध्यतेफलम् ॥ १७५ ॥
तत्सर्वं सिद्धयतिक्षिप्रं रामनामैव कीर्तनात्।
रोगार्तो मुच्यते रोगाद्बद्धो मुच्येत बन्धनात् ॥ १७६ ॥

भीतो भयात्प्रमुच्येत देवि सत्यं न संशयः ।
स्त्रीहत्या बालघाती च गोहत्या ब्रह्मशासनम् ॥ १७७ ॥

सर्वहत्याःक्षयं यान्ति पाठमात्रेण पार्वति ।
स्तेयी गुर्वङ्गनागामी तथा विश्वासघातकीः ॥ १७८ ॥

पाठमात्रेण देवेशि सर्वपापात्प्रमुच्यते ।
जीवघाती प्राणहर्ता धर्मनष्टस्तु यो नरः ॥ १७९ ॥

पठनाद्ब्रह्मसायुज्यं प्राप्नुयान्नात्र संशयः ।
अयोनिगामी यो मूढो ब्राह्मण्या सहसङ्गमी ॥ १८० ॥

श्रीरामनामसहस्रं पठनात्मुक्तपातकः ।
कुयोनिमैथुनाद्दुष्टो दुष्ट दुर्बुद्धिचेतसः ॥ १८१ ॥

एकावृत्या महेशानि सर्वपापैः प्रमुच्यते ।
इतीदं रामसहस्रं दशवारं पठेद्यदि ॥ १८२ ॥

संगच्छेद् वैष्णवं लोकं वायुर्नावमिवाम्भसि ।
भूतप्रेत पिशाचाश्च वैतालास्सिद्धचेटकादयः ॥ १८३ ॥

कूष्माण्डा राक्षसा घोरा भैरवा ब्रह्मखेचराः ।
श्रीरामनामग्रहणात् पलायन्ते दिशो दशः ॥ १८४ ॥

ॐ श्रीं ह्रीं रां क्लीं नमः स्वाहा एवमष्टाक्षरो मन्त्रः ।
जपेत् सहस्रनामान्ते मोहयेत् सकलं जगत् ॥ १८५ ॥

यत्र यत्र जपेद्धीरः शुचिर्भूत्वैकमानसः ।
तत्र तत्र जयो भूयान्नात्र कार्या विचारणा ॥ १८६ ॥

पौर्णमास्याममवास्यां च संक्रान्तौ ग्रहणेष्वपि ।
एकादश्यां नवम्यां च सावधाने सुसाधकः ॥ १८७ ॥

पठेत् सहस्रनामाख्यं स्तोत्रं मोक्षस्य साधनम् ।
मोहनं सर्व जीवानां भूयाद्राम प्रसादतः ॥ १८८ ॥

एकावृत्या लभेल्लक्ष्मीं द्विरावृत्या जगद्वशी ।
त्रिरावृत्या पठेन्नित्यं षण्मासात्सशिवोभवेत् ॥ १८९ ॥
चतुर्वारं पठेन्नित्यं दिव्य कायो भवेन्नरः ।
पञ्चपारं पठेन्नित्यं पुत्रवान्कीर्तिमान्भवेत् ॥ १९० ॥
षड्वारं पठेन्नित्यं सर्वंसिद्धीश्वरो भवेत् ।
सप्तवारं पठेत्स्तोत्रं वाचासिद्धि प्रजायते ॥ १९१ ॥
अष्टवारं पठेद्देवि षडङ्गाभ्यां सुयोगतः ।
साक्षाच्छ्रीरामचन्द्रस्य दर्शनं च भवेद्ध्रुवम् ॥ १९२ ॥
तुलस्यांश्वत्थयोर्मध्ये शालिग्रामस्य सन्निधौ ।
एकाहारी भूमिशायी जितक्रोधो जितेन्द्रियः ॥ १९३ ॥
नित्यं भक्त्यार्चयेद्विष्णुं स मुक्तः सर्वपातकैः ।
श्री रामं च हनूमन्तं सुग्रीवं च विभीषणम् ॥ १९४ ॥
अंगदं च जांवन्तं च स्मृत्वा पापैः प्रमुच्यते ।
राजद्वारे च संग्रामे नदीनद समुद्रके ॥ १९५ ॥
दुर्भिक्षे विग्रहे घोरे श्मशाने च चतुष्पथे ।
यत्र यत्र भये प्राप्ते तत्र तत्र पठेद्ध्रुवम् ॥ १९६ ॥
विजयं सर्वमाप्नोति दुर्लभं सुलभं भवेत् ।
सत्यं सत्यं पुनः सत्यं गोप्तव्यं पशुसन्निधौ ॥ १९७ ॥
तव भक्त्या मयाख्यातं नाख्येयं यस्य कस्यचित् ।
इहलोके सुखी भूत्वा परे मुक्तो भविष्यति ॥ १९८ ॥

श्री हरिः ॐ ॐ हरिः रां रां रां क्लीं ह्रीं स्वाहा ॥

इति श्री ब्रह्मयामले तन्त्रे सृष्टि प्रसंशायां
उमा महेश्वरसंवादे रकारादि
श्री रामसहस्रनाम संपूर्णम्

अमृत-वाणी

रामामृत पद पावन वाणी, राम नाम धुन सुधा समानी।
पावन पाठ राम गुण ग्राम, राम राम जप राम ही राम ॥ १ ॥

परम सत्य परम विज्ञान, ज्योति-स्वरूप राम भगवान्।
परमानन्द, सर्व-शक्तिमान्, राम परम है राम महान् ॥ २ ॥

अमृत-वाणी नाम उच्चारण, राम राम सुख सिद्धि-कारण।
अमृत वाणी अमृत श्री नाम, राम राम मुद मंगल-धाम ॥ ३ ॥

अमृतरूप राम-गुण गान, अमृत कथन राम व्याख्यान।
अमृत वचन राम की चर्चा, सुधा सम गीत राम की अर्चा ॥ ४ ॥

अमृत मनन राम का जाप, राम राम प्रभु राम अलाप।
अमृत चिन्तन राम का ध्यान, राम शब्द में शुचि समाधान ॥ ५ ॥

अमृत रसना वही कहावे, राम राम जहाँ नाम सुहावे।
अमृत कर्म नाम कमाई, राम राम परम सुखदाई ॥ ६ ॥

अमृत राम नाम जो ध्यावे, अमृत पद सो ही जन पावे।
राम नाम अमृत-रस सार, देता परम आनन्द अपार ॥ ७ ॥

दोहा—राम राम जप हे मना, अमृत वाणी मान।
राम नाम में राम को, सदा विराजित जान ॥ ८ ॥

राम नाम मुद मंगलकारी, विघ्न हरे सब पातक हारी।
राम नाम शुभ शकुन महान्, स्वस्तिशान्ति शिवकर कल्याण ॥ ९ ॥

राम राम श्रीराम विचार, मानिए उत्तम मंगलाचार।
राम राम मन मुख से गाना, मानो मधुर मनोरथ पाना ॥ १० ॥

राम नाम जो जन मन लावे, उसमें शुभ सभी बस जावे।
जहाँ हों राम नाम धुन-नाद, भागे वहाँ से विषम विषाद ।। ११ ।।

राम नाम मन-तप्त बुझावे, सुधा रस सींच शांति ले आवे।
राम राम जपिए कर भाव, सुविधा सुविधि बने बनाव ।। १२ ।।

दोहा—राम नाम सिमरो सदा, अतिशय मंगल मूल।
विषम-विकट संकट-हरण, कारक सब अनुकूल ।। १३ ।।

जपना राम राम है सुकृत, राम नाम है नाशक दुष्कृत।
सिमरे राम राम ही जो जन, उसका हो शुचितर तन मन ।। १४ ।।

जिसमें राम नाम शुभ जागे, उसके पाप ताप सब भागे।
मन से राम नाम जो उच्चारे, उसके भागें भ्रम भय सारे ।। १५ ।।

जिसमें बस जाय राम सुनाम, होवे वह जन पूर्णकाम।
चित में राम राम जो सिमरे, निश्चय भव सागर से तरे ।। १६ ।।

राम सिमरन होवे सहाई, राम सिमरन है सुखदाई।
राम सिमरन सबसे ऊंचा, राम शक्ति सुख ज्ञान समूचा ।। १७ ।।

दोहा—राम राम ही सिमर मन, राम राम श्री राम।
राम राम श्री राम भज, राम राम हरि-नाम ।। १८ ।।

मात-पिता बान्धव सुत दारा, धन जन साजन सखा प्यारा।
अन्त काल दे सके न सहारा, राम नाम तेरा तारनहारा ।। १९ ।।

सिमरन राम नाम है संगी, सखा स्नेही सुहृद शुभ अंगी।
युग युग का है राम सहेला, राम भक्त नहीं रहे अकेला ।। २० ।।

निर्जन वन विपद् हो घोर, निबड़ निशा तम सब ओर।
जोत जब राम नाम की जगे, संकट सर्व सहज से भगे ।। २१ ।।

बाधा बड़ी विषम जब आवे, वैर विरोध बिघ्न बढ़ जावे।
राम नाम जपिए सुख दाता, सच्चा साथी जो हितकर त्राता ।। २२ ।।

मन जब धैर्य को नहीं पावे, कुचिन्ता चित्त को चूर बनावे।
राम नाम जपे चिन्ता चूरक, चिन्तामणि चित्त चिन्तन पूरक॥ २३॥

शोक सागर हो उमड़ा आता, अति दुःख में मन घबराता।
भजिए राम राम बहु बार, जन का करता बेड़ा पार॥ २४॥

कड़ी घड़ी कठिनतर काल, कष्ट कठोर हो क्लेश कराल।
राम राम जपिए प्रतिपाल, सुख दाता प्रभु दीनदयाल॥ २५॥

घटना घोर घटे जिस बेर, दुर्जन उखड़े लेवें घेर।
जपिए राम नाम बिन देर, रखिये राम राम शुभ टेर॥ २६॥

राम नाम हो सदा सहायक, राम नाम सर्व सुखदायक।
राम राम प्रभु राम की टेक, शरण शान्ति आश्रय है एक॥ २७॥

पूजी राम नाम की पाइये, पाथेय साथ नाम ले जाइये।
नाशे जन्म मरण का खटका, रहे राम भक्त नहीं अटका॥ २८॥

दोहा—राम राम श्रीराम है, तीन लोक का नाथ।
परम पुरुष पावन प्रभु, सदा का संगी साथ॥ २९॥

यज्ञ तप ध्यान योग ही त्याग, बन कुटी वास अति वैराग।
राम नाम बिना नीरस फोक, राम राम जप तरिए लोक॥ ३०॥

राम जाप सब संयम साधन, राम जाप है कर्म आराधन।
राम जाप है परम अभ्यास, सिमरो राम नाम 'सुख-रास'॥ ३१॥

राम जाप कहीं ऊँची करणी, बाधा विघ्न बहु दुःख हरणी।
राम राम महा-मन्त्र जपना, है सुव्रत नेम तप तपना॥ ३२॥

राम जाप है सरल समाधि, हरे सब आधि व्याधि उपाधि।
ऋद्धि सिद्धि और नव निधान, दाता राम है सब सुख खान॥ ३३॥

राम राम चिन्तन सुविचार, राम राम जप निश्चय धार।
राम राम श्रीराम ध्याना, है परम पद अमृत पाना॥ ३४॥

दोहा—राम राम श्रीराम हरि, सहज परम है योग।
राम राम श्रीराम जप, दाता अमृत भोग ॥ ३५ ॥

नाम चिन्तामणि रत्न अमोल, राम नाम महिमा अनमोल।
अतुल प्रभाव अति प्रताप, राम नाम कहा तारक जाप ॥ ३६ ॥

बीज अक्षर महा-शक्ति-कोष, राम राम जप शुभ सन्तोष।
राम राम श्री राम राम मंत्र, तन्त्र बीज परात् पर यन्त्र ॥ ३७ ॥

बीजाक्षर पद पद्म प्रकाशे, राम राम जप दोष विनाशे।
कुँडलिनी बोधे शुष्मणा खोले, राम मंत्र अमृत रस घोले ॥ ३८ ॥

उपजे नाद सहज बहु भांत, अजपा जाप भीतर हो शान्त।
राम राम पद शक्ति जगावे, राम राम धुन जभी रमावे ॥ ३९ ॥

राम नाम जब जगे अभंग, चेतन भाव जगे सुख-संग।
ग्रन्थी अविद्या टूटे भारी, राम लीला की खिले फुलवारी ॥ ४० ॥

दोहा—पतित पावन परम पाठ, राम राम जप याग।
सफल सिद्ध कर साधना, राम नाम अनुराग ॥ ४१ ॥

तीन लोक का समझिए सार, राम नाम सब ही सुखकार।
राम नाम की बहुत बड़ाई, वेद पुराण मुनि जन गाई ॥ ४२ ॥

यति सती साधु संत सयाने, राम नाम निश दिन बखाने।
तापस योगी सिद्ध ऋषिवर, जपते राम राम सब सुखकर ॥ ४३ ॥

भाव भक्ति भरे भजनीक, भजते राम नाम रमणीक।
भजते भक्त भाव भरपूर, भ्रम भय भेद-भाव से दूर ॥ ४४ ॥

पूर्ण पंडित पुरुष प्रधान, पावन परम पाठ ही मान।
करते राम राम जप ध्यान, सुनते राम अनाहद् तान ॥ ४५ ॥

इसमें सुरति सुर रमाते, राम राम स्वर साध समाते।
देव देवीगण देव विधाता, राम राम भजते [illegible]त्राता ॥ ४६ ॥

राम राम सुगुणी जन गाते, स्वर संगीत से राम रिझाते।
कीर्त्तन कथा करते विद्वान्, सार सरस संग साधनवान् ॥ ४७ ॥

दोहा—मोहक मंत्र अति मधुर, राम राम जप ध्यान।
होता तीनों लोक में, राम नाम गुण गान ॥ ४८ ॥

मिथ्या मन-कल्पित मत जाल, मिथ्या है मोह कुमद बेताल।
मिथ्या मन मुखिया मनोराज, सच्चा है राम नाम जप काज ॥ ४९ ॥

मिथ्या है वाद विवाद विरोध, मिथ्या है वैर निन्दा हठ क्रोध।
मिथ्या द्रोह दुर्गुण दुःख खान, राम नाम जप सत्य निधान ॥ ५० ॥

सत्य मूलक है रचना सारी, सर्व सत्य प्रभु राम पसारी।
बीज से तरु मकड़ी से तार, हुआ त्यों राम से जग विस्तार ॥ ५१ ॥

विश्व वृक्ष का राम मूल, उसको तू प्राणी कभी न भूल।
साँस साँस से सिमर सुजान, राम राम प्रभु राम महान् ॥ ५२ ॥

लय उत्पत्ति पालन रूप, शक्ति चेतना आनन्द स्वरूप।
आदि अन्त और मध्य है राम, अशरण शरण है राम विश्राम ॥ ५३ ॥

दोहा—राम नाम जप भाव से, मेरे अपने आप।
परम पुरुष पालक प्रभु, हर्त्ता पाप त्रिताप ॥ ५४ ॥

राम नाम बिना बृथा विहार, धन धान्य सुख भोग पसार।
वृथा है सब सम्पद सम्मान, होवे तन यथा रहित प्राण ॥ ५५ ॥

नाम बिना सब नीरस स्वाद, ज्यों हो स्वर बिना राग विषाद।
नाम बिना नहीं सजे सिंगार, राम नाम है सब रस सार ॥ ५६ ॥

जगत् का जीवन जानो राम, जग की ज्योति जाज्वल्यमान।
राम नाम बिना मोहिनी माया, जीवन-हीन यथा तन छाया ॥ ५७ ॥

सूना समझिए सब संसार, जहाँ नहीं राम नाम संचार।
सूना जानिए ज्ञान विवेक, जिसमें राम नाम नहीं एक ॥ ५८ ॥

सूने ग्रन्थ पन्थ मत पोथे, बने जो राम नाम बिन थोथे।
राम नाम बिन वाद विचार, भारी भ्रम का करे प्रचार ॥ ५९ ॥

दोहा—राम नाम दीपक बिना, जन-मन में अंधेर।
इससे हे मम मन रहे, नाम सुमाला फेर ॥ ६० ॥

राम राम भज कर श्रीराम, करिए नित्य ही उत्तम काम।
जितने कर्तव्य कर्म कलाप, करिए राम राम कर जाप ॥ ६१ ॥

करिए गमनागम के काल, राम जाप जो करता निहाल।
सोते जगते सब दिन याम, जपिए राम राम अभिराम ॥ ६२ ॥

जपते राम नाम महा माला, लगता नरक द्वार पै ताला।
जपते राम राम जप पाठ, जलते कर्मबन्ध यथा काठ ॥ ६३ ॥

तान जब राम नाम की टूटे, भांडा भरा अभाग्य भय फूटे।
मनका है राम नाम का ऐसा, चिन्ता-मणि पारस-मणि जैसा ॥ ६४ ॥

राम नाम सुधा-रस सागर, राम नाम ज्ञान गुण-आगर।
राम नाम श्रीराम महाराज, भव-सिन्धु में है अतुल जहाज ॥ ६५ ॥

राम नाम सब तीर्थ स्थान, राम राम जप परम स्नान।
धोकर पाप-ताप सब धूल, कर दे भय-भ्रम को उन्मूल ॥ ६६ ॥

राम जाप रवि-तेज समान, महा मोह-तम हरे अज्ञान।
राम जाप दे आनन्द महान्, मिले उसे जिसे दे भगवान् ॥ ६७ ॥

दोहा—राम नाम को सिमरिये, राम राम एक तार।
परम पाठ पावन परम, पतित अधम दे तार ॥ ६८ ॥

माँगूँ मैं राम-कृपा दिन रात, राम-कृपा सब हरे उत्पात।
राम-कृपा लेवे अन्त सम्हाल, राम प्रभु है जन प्रतिपाल ॥ ६९ ॥

राम-कृपा है उच्चतर योग, राम-कृपा है शुभ संयोग।
राम-कृपा सब साधन-मर्म, राम-कृपा संयम सत्य धर्म ॥ ७० ॥

राम नाम को मन में बसाना, सुपथ राम-कृपा का है पाना।
मन में राम-धुन जब फिरे, राम-कृपा तब ही अवतरे॥ ७१॥

रहूँ मैं नाम में होकर लीन, जैसे जल में हो मीन अदीन।
राम-कृपा भरपूर मैं पाऊँ, परम प्रभु को भीतर ल्याऊँ॥ ७२॥

भक्ति भाव से भक्त सूजान, भजते राम कृपा का निधान।
राम-कृपा उस जन में आवे, जिसमें आप ही राम बसावे॥ ७३॥

कृपा प्रसाद है राम की देनी, काल-व्याल जंजाल हर लेनी।
कृपा-प्रसाद सुधा-सुख-स्वाद, राम नाम दे रहित विवाद॥ ७४॥

प्रभु प्रसाद शिव शान्ति दाता, ब्रह्म धाम में आप पहुँचाता।
प्रभु-प्रसाद पावे वह प्राणी, राम राम जपे अमृत वाणी॥ ७५॥

औषध राम नाम की खोइये, मृत्यु जन्म के रोग मिटाइये।
राम नाम अमृत रस-पान, देता अमल अचल निर्वाण॥ ७६॥

दोहा—राम राम धुन गूँज से, भव भय जाते भाग।
राम नाम धुन ध्यान से, सब शुभ जाते जाग॥ ७७॥

माँगूँ मैं राम नाम महादान, करता निर्धन का कल्याण।
देव द्वार पर जन्म का भूखा, भक्ति प्रेम अनुराग से रूखा॥ ७८॥

'पर हूँ तेरा'—यह लिये टेर, चरण पड़े की रखियो मेर।
अपना आप विरद विचार, दीजिए भगवन्! नाम प्यार॥ ७९॥

राम नाम ने वे भी तारे, जो थे अधर्मी अधम हत्यारे।
कपटी कुटिल कुकर्मी अनेक, तर गये राम नाम ले एक॥ ८०॥

तर गये धृति धारणा हीन, धर्म कर्म में जन अति दीन।
राम राम श्रीराम जप जाप, हुए अतुल विमल अपाप॥ ८१॥

राम नाम मन मुख में बोले, राम नाम भीतर पट खोले।
राम नाम से कमल विकास, होवें सब साधन सुख-रास॥ ८२॥

राम नाम घट भीतर बसे, साँस साँस नस नस से रसे।
सपने में भी न बिसरे नाम, राम राम श्रीराम राम राम ॥ ८३ ॥

दोहा—राम नाम के मेल से, सध जाते सब काम।
देव-देव देवे यदा, दान महा सुख धाम ॥ ८४ ॥

अहो ! मैं राम नाम धन पाया, कान में राम नाम जब आया।
मुख से राम नाम जब गाया, मन से राम नाम जब ध्याया ॥ ८५ ॥

पाकर राम नाम धन-राशी, घोर अविद्या विपद् विनाशी।
बढ़ा जब राम प्रेम का पूर, संकट संशय हो गये दूर ॥ ८६ ॥

राम नाम जो जपे एक बेर, उसके भीतर कोष कुबेर।
दीन दुखिया दरिद्र कंगाल, राम राम जप होवे निहाल ॥ ८७ ॥

हृदय राम नाम से भरिए, संचय राम नाम धन करिए।
घट में नाम मूर्ति धरिए, पूजा अन्तर्मुख हो करिए ॥ ८८ ॥

आँखें मूँद के सुनिए सितार, राम राम सुमधुर झंकार।
उसमें मन का मेल मिलाओ, राम राम सुर में ही समाओ ॥ ८९ ॥

जपूँ मैं राम राम प्रभु राम, ध्याऊँ मैं राम हरे राम।
सिमरूँ मैं राम राम प्रभु राम, गाऊँ मैं राम राम श्रीराम ॥ ९० ॥

अमृत वाणी का नित्य गाना, राम राम मन बीच रमाना।
देता संकट विपद निवार, करता शुभ श्री मंगलाचार ॥ ९१ ॥

दोहा—राम नाम जप पाठ से, हो अमृत संचार।
राम-धाम में प्रीति हो, सुगुण-गण का विस्तार ॥ ९२ ॥

तारक मंत्र राम है, जिसका सुफल अपार।
इस मंत्र के जाप से, निश्चय बने निस्तार ॥ ९३ ॥

परम कृपा सुरूप है, परम प्रभु श्रीराम।
जन पावन परमात्मा, परम पुरुष सुख धाम ॥ ९४ ॥

सुखदा है शुभा कृपा, शक्ति शान्ति स्वरूप।
है ज्ञान आनन्द मयी, राम कृपा अनूप ॥ ९५ ॥

परम पुण्य प्रतीक है, परम ईश का नाम।
तारक मंत्र शक्ति घर, बीजाक्षर है राम ॥ ९६ ॥

साधक साधन साधिए, समझ सकल शुभ सार।
वाचक वाच्य एक है, निश्चित धार विचार ॥ ९७ ॥

मंत्रमय ही मानिए, इष्ट देव भगवान्।
देवालय है राम का, राम शब्द गुण खान ॥ ९८ ॥

राम नाम आराधिए, भीतर भर ये भाव।
देव-दया अवतरण का, धार चौगुना चाव ॥ ९९ ॥

मन्त्र धारणा यों कर, विधि से लेकर नाम।
जपिए निश्चय अचल से, शक्ति धाम श्री राम ॥ १०० ॥

यथा वृक्ष भी बीज से, जल रज ऋतु संयोग।
पा कर, विकसे क्रम से, त्यों मन्त्र से योग ॥ १०१ ॥

यथा शक्ति परमाणु में, विद्युत् कोष समान।
है मन्त्र त्यों शक्तिमय, ऐसा रखिये ध्यान ॥ १०२ ॥

ध्रुव धारणा धार यह, राधिए मन्त्र निधान।
हरि-कृपा अवतरण का, पूर्ण रखिए ज्ञान ॥ १०३ ॥

आता खिड़की द्वार से, पवन तेज का पूर।
है कृपा त्यों आ रही, करती दुर्गुण दूर ॥ १०४ ॥

बटन दबाने से यथा, आती बिजली धार।
नाम जाप प्रभाव से, त्यों कृपा अवतार ॥ १०५ ॥

खोलते ही जल नल ज्यों, बहता वारि बहाव।
जप से कृपा अवतरित हो, तथा सजग कर भाव ॥ १०६ ॥

राम शब्द को ध्याइये, मन्त्र तारक मान।
स्वशक्ति सत्ता जग करे, उपरि चक्र को यान ॥ १०७ ॥
दशम द्वार से हो तभी, राम कृपा अवतार।
ज्ञान शक्ति आनन्द सह, साम शक्ति संचार ॥ १०८ ॥
देव दया स्वशक्ति का, सहस्र कमल में मिलाप।
हो सत्पुरुष संयोग से, सर्व नष्ट हों पाप ॥ १०९ ॥

नमस्कार सप्तक

करता हूँ मैं बन्दना, नत शिर बारम्बार।
तुझे देव परमात्मन्, मंगल शिव शुभकार ॥ १ ॥
अंजलि पर मस्तक किये, विनय भक्ति के साथ।
नमस्कार मेरा तुझे, होवे जग के नाथ ॥ २ ॥
दोनों कर को जोड़ कर, मस्तक घुटने टेक।
तुझको हो प्रणाम मम, शत शत कोटि अनेक ॥ ३ ॥
पाप-हरण मंगल-करण, चरण शरण का ध्यान।
धार करूँ प्रणाम मैं, तुझको शक्ति-निधान ॥ ४ ॥
भक्ति भाव शुभ भावना, मन में भर भरपूर।
श्रद्धा से तुझको नमूँ, मेरे राम हजूर ॥ ५ ॥
ज्योतिर्मय जगदीश हे, तेजो मय अपार।
परम पुरुष पावन परम, तुझको हो नमस्कार ॥ ६ ॥
सत्य ज्ञान आनन्द के, होवे बहु प्रणाम।
पुलकित हों मेरा तुझे, होवे बहु प्रणाम ॥ ७ ॥

परमात्मा श्रीराम परम सत्य, प्रकाश रूप, परम ज्ञानानन्द-स्वरूप; सर्वशक्तिमान्, एकैवाद्वितीय परमेश्वर, परम पुरुष, दयालु देवाधिदेव हैं; उसको बार-बार नमस्कार, नमस्कार, नमस्कार।

रामरक्षास्तोत्रम्

नवरात्र में प्रतिदिन नौ दिनों तक ब्राह्म मुहूर्त में नित्यकर्म तथा स्नानादि से निवृत्त हो शुद्ध वस्त्र धारण कर कुशा के आसन पर सुखासन लगा कर बैठ जाइये। भगवान् श्रीराम के कल्याणकारी स्वरूप में चित्त को एकाग्र करके इस महान् फलदायी स्तोत्र का कम-से-कम ग्यारह बार और यदि न हो सके तो सात बार नियमित रूप से प्रतिदिन पाठ कीजिये। पाठ करनेवाले की श्रीराम की शक्तियों के प्रति जितनी अखण्ड श्रद्धा होगी, इतना ही फल प्राप्त होगा। पूर्ण शान्ति और विश्वास से इसका जाप होना चाहिए, यहाँ तक कि यह कण्ठस्थ हो जाय।

विनियोगः

ॐ अस्य श्रीरामरक्षास्तोत्रमन्त्रस्य बुधकौशिक ऋषिः श्रीसीता-रामचन्द्रो देवता अनुष्टुप् छन्दः सीता शक्तिः श्रीमान् हनुमान कीलकं श्रीरामचन्द्रप्रीत्यर्थे रामरक्षास्तोत्रजपे विनियोगः।

ध्यानम्

ध्यायेदाजानुबाहुं धृतशरधनुषं बद्धपद्मासनस्थं
पीतं वासो वसानं नवकमलदलस्पर्धिनेत्रं प्रसन्नम्।
वामाङ्कारूढसीतामुखकमलमिलल्लोचनं नीरदाभं
नानालंकारदीप्तं दधतमुरुजटामण्डलं रामचन्द्रम्॥

स्तोत्रम्

चरितं रघुनाथस्य शतकोटि प्रविस्तरम्।
एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम्॥ १॥

ध्यात्वा नीलोत्पलश्यामं रामंराजीव लोचनम्।
जानकीलक्ष्मणोपेतं जटामुकुटमण्डितम्॥ २॥

सासितूणधनुर्बाणपाणिं नक्तंचरान्तकम् ।
स्वलीलया जगत्त्रातुमाविर्भूतमजं विभुम् ॥ ३ ॥

रामरक्षां पठेत्प्राज्ञः पापघ्नीं सर्वकामदाम् ।
शिरो मे राघवः पातु भालं दशरथात्मजः ॥ ४ ॥

कौसल्येयो दृशौ पातु विश्वामित्रप्रियः श्रुती ।
घ्राणं पातु मखत्राता मुखं सौमित्रवत्सलः ॥ ५ ॥

जिह्वां विद्यानिधिः पातु कण्ठं भरतवन्दितः ।
स्कन्धो दिव्यायुधः पातु भुजौ भग्नेशकार्मुकः ॥ ६ ॥

करौ सीतापतिः पातु हृदयं जामदग्न्यजित् ।
मध्यं पातु खरध्वंसी नाभिं जाम्बवदाश्रयः ॥ ७ ॥

सुग्रीवेशः कटी पातु सक्थिनी हनुमत्प्रभुः ।
ऊरु रघूत्तमः पातु रक्षःकुलविनाशकृत् ॥ ८ ॥

जानुनी सेतुकृत्पातु जङ्घे दशमुखान्तकः ।
पादौ विभीषणश्रीदः पातु रामोऽखिलं वपुः ॥ ९ ॥

एतां रामबलोपेतां रक्षां यः सुकृती पठेत् ।
स चिरायुः सुखी पुत्री विजयी विनयी भवेत् ॥ १० ॥

पातालभूतलव्योमचारिणश्छद्मचारिणः ।
न द्रष्टुमपि शक्तास्ते रक्षितं रामनामभिः ॥ ११ ॥

रामेति रामभद्रेति रामचन्द्रेति वा स्मरन् ।
नरो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति ॥ १२ ॥

जगज्जैत्रैकमन्त्रेण रामनाम्नाभिरक्षितम् ।
यः कण्ठे धारयेत्तस्य करस्थाः सर्वसिद्धयः ॥ १३ ॥

वज्रपञ्जरनामेदं यो रामकवचं स्मरेत् ।
अव्याहताज्ञः सर्वत्र लभते जयमङ्गलम् ॥ १४ ॥

आदिष्टवान्यथा स्वप्ने रामरक्षामिमां हरः ।
तथा लिखितवान्प्रातः प्रबुद्धो बुधकौशिकः ॥ १५ ॥

आरामः कल्पवृक्षाणां विरामः सकलापदाम् ।
अभिरामस्त्रिलोकानां रामः श्रीमान्स नः प्रभुः ॥ १६ ॥

तरुणौ रूपसम्पन्नौ सुकुमारौ महाबलौ ।
पुण्डरीक विशालाक्षौ चीरकृष्णाजिनाम्बरौ ॥ १७ ॥

फलमूलाशिनौ दान्तौ तापसौ ब्रह्मचारिणौ ।
पुत्रौ दशरथस्यैतौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ॥ १८ ॥

शरण्यौ सर्वसत्त्वानां श्रेष्ठौ सर्वधनुष्मताम् ।
रक्षः कुलनिहन्तारौ त्रायेतां नो रघूत्तमौ ॥ १९ ॥

आत्तसज्जधनुषाविषुस्पृशावक्षयाशुगनिषङ्गसङ्गिनौ ।
रक्षणाय मम रामलक्ष्मणावग्रतः पथि सदैव गच्छताम् ॥ २० ॥

संनद्धः कवची खड्गी चापबाणधरो युवा ।
गच्छन्मनोरथान्नश्च रामः पातु सलक्ष्मणः ॥ २१ ॥

रामो दाशरथिः शूरो लक्ष्मणानुचरो बली ।
काकुत्स्थः पुरुषः पूर्णः कौसल्येयो रघूत्तमः ॥ २२ ॥

वेदान्तवेद्यो यज्ञेशः पुराणपुरुषोत्तमः ।
जानकीवल्लभः श्रीमानप्रमेयपराक्रमः ॥ २३ ॥

इत्येतानि जपन्नित्यं मद्भक्तः श्रद्धयान्वितः ।
अश्वमेधाधिकं पुण्यं सम्प्राप्नोति न संशयः ॥ २४ ॥

रामं दूर्वादलश्यामं पद्माक्षं पीतवाससम् ।
स्तुवन्ति नामभिर्दिव्यैर्न ते संसारिणो नराः ॥ २५ ॥

रामं लक्ष्मणपूर्वजं रघुवरं सीतापतिं सुन्दरं
काकुत्स्थं करुणार्णवं गुणनिधिं विप्रप्रियं धार्मिकम् ।

राजेन्द्रं सत्यसंधं दशरथतनयं श्यामलं शान्तमूर्ति
वन्दे लोकाभिरामं रघुकुलतिलकं राघवं रावणारिम् ॥ २६ ॥

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे ।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥ २७ ॥

श्रीराम राम रघुनन्दन राम राम
श्रीराम राम भरताग्रज राम राम ।
श्रीराम राम रणकर्कश राम राम
श्रीराम राम शरणं भव राम राम ॥ २८ ॥

श्रीरामचन्द्रचरणौ मनसा स्मरामि
श्रीरामचन्द्रचरणौ वचसा गृणामि ।
श्रीरामचन्द्रचरणौ शिरसा नमामि
श्रीरामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ २९ ॥

माता रामो मत्पिता रामचन्द्रः
स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः ।
सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालु-
र्नान्यं जाने नैव जाने न जाने ॥ ३० ॥

दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे च जनकात्मजा ।
पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम् ॥ ३१ ॥

लोकाभिरामं रणरङ्गधीरं राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम् ।
कारुण्यरूपं करुणाकरं तं श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये ॥ ३२ ॥

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥ ३३ ॥

कूजन्तं रामरामेति मधुरं मधुराक्षरम् ।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम् ॥ ३४ ॥

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम् ।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥ ३५ ॥
भर्जनं भवबीजानामर्जनं सुखसम्पदाम् ।
तर्जनं यमदूतानां रामरामेति गर्जनम् ॥ ३६ ॥
रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे
रामेणाभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः ।
रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोऽस्म्यहं
रामे चित्तलयः सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर ॥ ३७ ॥
राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे ।
सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने ॥ ३८ ॥

इति श्रीबुधकौशिकमुनिविरचितं

श्रीरामरक्षास्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

श्रीराममङ्गलाशासनम्

मङ्गलं कौशलेन्द्राय महनीयगुणाब्धये ।
चक्रवर्तितनूजाय सार्वभौमाय मङ्गलम् ॥ १ ॥

वेदवेदान्तवेद्याय मेघश्यामलमूर्तये ।
पुंसां मोहनरूपाय पुण्यश्लोकाय मङ्गलम् ॥ २ ॥

विश्वामित्रान्तरङ्गाय मिथिलानगरीपतेः ।
भाग्यानां परिपाकाय भव्यरूपाय मङ्गलम् ॥ ३ ॥

पितृभक्ताय सततं भ्रातृभिः सह सीतया ।
नन्दिताखिललोकाय रामभद्रायमङ्गलम् ॥ ४ ॥

त्यक्तसाकेतवासाय चित्रकूटविहारिणे ।
सेव्याय सर्वयमिनां धीरोदयाय मङ्गलम् ॥ ५ ॥

सौमित्रिणा च जानक्या चापवाणासिधारिणे ।
संसेव्याय सदा भक्त्या स्वामिने मम मङ्गलम् ॥ ६ ॥

दण्डकारण्यवासाय खरदूषणशत्रवे ।
गृध्रराजाय भक्ताय मुक्तिदायास्तु मङ्गलम् ॥ ७ ॥

सादरं शवरीदत्तफलमूलाभिलाषिणे ।
सौलभ्यपरिपूर्णाय सत्त्वोद्रिक्ताय मङ्गलम् ॥ ८ ॥

हनुमत्समवेताय हरीशाभीष्टदायिने ।
बालिप्रमथनायास्तु महाधीराय मङ्गलम् ॥ ९ ॥

श्रीमते रघुवीराय सेतूल्लङ्घितसिन्धवे ।
जितराक्षसराजाय रणधीराय मङ्गलम् ॥ १० ॥
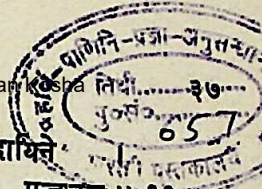
विभीषणकृते प्रीत्या लङ्काभीष्टप्रदायिने।
सर्वलोकशरण्याय श्रीराघवाय मङ्गलम् ॥ ११ ॥
आसाद्य नगरीं दिव्यामभिषिक्ताय सीतया।
राजाधिराजराजाय रामभद्राय मङ्गलम् ॥ १२ ॥
ब्रह्मादिदेवसेव्याय ब्रह्मण्याय महात्मने।
जानकीप्राणनाथाय रघुनाथाय मङ्गलम् ॥ १३ ॥
श्रीसौम्यजामातृमुनेः कृपयास्मानुपेयुषे।
महते मम नाथाय रघुनाथाय मङ्गलम् ॥ १४ ॥
मङ्गलाशासनपरैर्मदाचार्यपुरोगमैः।
सर्वैश्च पूर्वैराचार्यैः सत्कृतायास्तु मङ्गलम् ॥ १५ ॥
रम्यजामातृमुनिना मङ्गलाशासनं कृतम्।
त्रैलोक्याधिपतिः श्रीमान् करोतु मङ्गलं सदा ॥ १६ ॥

इति श्रीराममङ्गलाशासनं सम्पूर्णम्

—०—

नामहिं के सुमिरो सुख पाइहों और न काम गिनो जग कामहिं
कामहिं जो नहि आवहि ये महि सुत मातु पिता प्रिय बन्धुओ वामहिं।
वामहिं हैं सिगरे भव में, छिन नाहिं लह्यो कतहुँ विसरामहिं
रामहिं रामरटो रे रटो यह वेद पुराणकोहै परिणामहिं ॥

स्तुती

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भव भय दारुणं।
नव कंज लोचन, कंज मुख, कर कंज पद कंजारुणं॥

कंदर्प अगणित अमित छवि, नवनील नीरद सुंदरं।
पट पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं॥

भजु दीनबंधु दिनेश दानव दैत्य वंश निकंदनं।
रघुनंद आनंद कंद कोशल चंद दशरथ नंदनं॥

सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदारु अंग विभूशणं।
आजानु भुज शर-चाप-धर संग्राम जित खरदूषणं॥

इति वदति तुलसीदास शंकर शेष मुनि मन रंजनं।
मम हृदय कंज निवास कुरु, कामादि खल दल गंजनं॥

*

बैठत रामहि ऊठत रामहि बोलत रामहि राम रह्यो है
खावत रामहि पीवत रामहि धामहि रामहि राम गह्योहै।
जागत रामहि सोवतरामहि जोवत रामहि राम गह्यो है
देतहु रामहि लेतहु रामहि सुन्दर रामहि राम गह्यो है॥

भूमिहु रामहि आयहु रामहि तेजहु रामहि वायुहि रामे
व्योमहु रामहि चन्द्रहु रामहि सुन्दर रामहि शीतहि धामे।
आदिहु रामहि अन्तहु रामहि मध्यहु रामहि पुर्षरु वामे
आजहु रामहि कालहु रामहि सुन्दर रामहि रामहि धामे॥

स्तुति

जय जय सुरनायक जन सुखदायक प्रनत पाल भगवंता ।
गोद्विज हितकारी जय असुरारी सिंधुसुता प्रिय कंता ।।

पालन सुर धरनी अद्भुत करनी मरम न जाने कोई ।
जो सहज कृपाला दीनदयाला करउ अनुग्रह सोई ।।

जय जय अविनाशी सब घट वासी व्यापक परमानंदा ।
अविगत गोतीतं चरित पुनीतं मायारहित मुकुंदा ।।

जेहि लागि विरागी अति अनुरागी विगत मोह मुनिवृंदा ।
निसिवासर ध्यावहिं गुन गन गावहिं जयति सच्चिदानंदा ।।

जेहि सृष्टि उपाई त्रिविध बनाई संग सहाय न दूजा ।
सों करउ अघारी चिंत हमारी जानिअ भगति न पूजा ।।

जो भव भय भंजन मुनि मन रजंन गंजन विपति बरुथा ।
मन वच क्रम वानी छाड़ि सयानी सरन सकल सुरजूथा ।।

सारद श्रुति सेषा रिषय असेषा जा कहुँ कोउ नहि जाना ।
जेहि दीन पिआरे वेद पुकारे द्रवउ सो भगवाना ।।

भव वारिधि मंदर सब विधि सुंदर गुनमंदिर सुखपुंजा ।
मुनि सिद्ध सकलसुर परम भयातुर नमत नाथ पद कंजा ।।

आरती

आरति कीजै श्रीरघुवर की।
सत चित आनँद :शिव सुंदर की॥
दशरथ-तनय कौसिला नन्दन,
सुरमुनि रक्षक दैत्य निकन्दन,
अनुगत भक्त भक्त-उर चन्दन,
मर्यादा पुरुषोत्तम वर की॥
निर्गुन-सगुण, अरुप-रुपनिधि,
सकल लोक-वन्दित विभिन्न विधि,
हरण शोक-भय, दायक सब सिद्धि
माया रहित दिव्य नर वर की॥
जानकिपति सुराधिपति जपति,
अखिल लोक पालक त्रिलोक गति,
विश्ववन्द्य अनवद्य अमित मति,
एक मात्र गति सचराचर की॥
शरणागत-वत्सलव्रतधारी,
भक्त-कल्पतरु-वर असुरारी,
नाम लेत जग पावन कारी
वानर-सखा दीन दुखहर की॥
आरती कीजै श्रीरघुवर की।
सत चित आनंद शिव सुंदर की॥

श्री सद्गुरुदेव की आरती
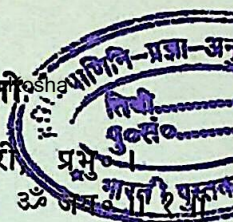
ॐ जय गुरुदेव दयानिधि, दीनन हितकारी, प्रभु०।
जय जय मोह विनाशक (२) भव बंधनहारी ॐ जय० ॥ १ ॥
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, गुरु मूरति धारी, प्रभु०।
वेद पुराण बखानत (२) गुरु महिमा भारी ॐ जय० ॥ २ ॥
जप तप तीरथ संयम, दान बहुत दीने, प्रभु०।
गुरुबिन ज्ञान न होवे (२) कोटि जतन कीन्हें, ॐ जय० ॥ ३ ॥
माया मोह नदी जल, जीव बहे सारे, प्रभु०।
नाम जहाज बैठाकर (२) गुरु पल में तारे, ॐ जय० ॥ ४ ॥
काम क्रोध मद मत्सर, चोर बड़े भारे, प्रभु०।
ज्ञान खड्ग दे करमें (२) गुरु सब संहारे, ॐ जय० ॥ ५ ॥
नाना पंथ जगत में निज-निज गुण गावे, प्रभु०।
सबका सार बताकर (२) गुरु मारग लावे, ॐ जय० ॥ ६ ॥
गुरु चरणामृत निर्मल, सब पातक हारी, प्रभु०।
वचन सुनत तम नासे (२) सब संशय हारी, ॐ जय० ॥ ७ ॥
तन मन धन सब अरपन, गुरुचरणन कीजै प्रभु०।
ब्रह्मानन्द परमपद (२) मोक्ष गति लीजै, ॐ जय० ॥ ८ ॥

धुन

राम राघव राम राघव राम राघव पाहि माम्।
जानकीवर मधुर मूरति, राम राघव रक्ष माम् ॥
कृष्ण केशव कृष्ण केशव कृष्ण केशव पाहि माम्।
राधिकावर मधुर मूरति, कृष्ण केशव रक्ष माम् ॥
चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर पाहि माम्।
पार्वतीवर मधुर मूरति, चन्द्रशेखर रक्ष माम् ॥

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रोत्रिय

काशी कैलासपीठाधं

श्री १०८ स्वामी माधवानन्द

महामण्डलेश्वर

सांख्य-योग, वेदान्ताच

कैलासाश्रम-बिरदोपुर वाराण

संबन्धित संस्थायें

१
श्री वराह मन्दिर
सूकरक्षेत्र
पो० सोरों, जि० एटा

४
श्री मुरलीमनोहर मन्दिर
तुलसीनगर-बदरिया
पो० सोरों, जि० एटा

२
संन्यासाश्रम
बैजनत्था
वाराणसी २२१०१०

५
श्री हरिगिरि मठ
ढुंढीराजगली
वाराणसी-

३
एकवना मठ
पो० एकवना (घाट)
जि० भोजपुर (आरा)

६
कोड़िया
पो० वि
जि० पटन

रत्ना प्रिंटिंग वर्क्स, बी-२१/४२ ए, कमच्छा, वाराणसी